Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (Online)
Vol. 7, Issue 1, March 2021

पाणिनी के अष्टाध्यायी में उच्चारण शुद्धि का विज्ञान

*પ્રો. ડૉ. સુરવીરસિંહ આઈ. ઠાકોર
આર્ટસ્ એન્ડ કોમર્સ કૉલેજ,
ઓલપાડ, જિ. સુરત

हम सब जानते हैं कि मनुष्य अपना व्यवहार वाणी द्वारा करता है । हम जो वर्णो का उच्चारण करते हैं, उसके द्वारा कई शब्द उच्चारण में आते हैं और शब्दों के समुदाय से हम वाक्यों का उच्चारण करते हैं । इस प्रकार हम अपनी बात अन्य मनुष्य तक पहुँचाते हैं । शब्द के ज्ञान के बारे में कहा जाता है कि –

"एक शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठुः प्रयुक्तः ।
स्वर्गे लोके च कामधुक भवति'"

एक ही शब्द को अच्छी तरह समझने से या उसका योग्य प्रयोग करे तो वह स्वर्ग में और इस पृथ्वीलोक में कामधेनु के समान बनता है ।

महर्षि पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' नाम का व्याकरण ग्रंथ लिखा है । इस ग्रंथ में करीबन 4000 जितने सूत्रें आये हैं । उसका आठ अध्यायों में बाँटा गया है । इसलिए इस व्याकरण को अष्टाध्यायी व्याकरण कहा है । यह व्याकरण संपूर्ण और सूक्ष्मता (लाघव) पूर्ण है । यह ग्रंथ मानव मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट कृति है । ऐसा बूल्मफिल्ड मानते हैं – "व्दम वि जीम हतमंजमेज उवउमदजे वभ्निउंद पदजमससपहमदबमण" (स्ण ठसववउपिमसक स्ंदहनंहमए छमू ल्वताए 1933)

अष्टाध्यायी की रचना पाणिनि ने की । यह अष्टाध्यायी के सूत्रें पर वार्तिको– कात्याय ने रचा और भगवान पतंजलि ने 'महाभाष्य' की रचना की । इस प्रकार तीनों आचार्यो के प्रयास से संस्कृत भाष्य का जो व्याकरण तैयार हुआ इसे 'त्रिमुनि व्याकरणम्' कहा गया है । इस त्रिमुनिओं के व्याकरण पर भट्टोजि दीक्षित ने 'वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी' नाम के ग्रंथ की रचना की । इस संदर्भ में भट्टोजी दीक्षित स्वयं कहते हैं कि –

"मुनित्र्यं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च ।
वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदीयं विरच्यते'"

*પ્રો. ડૉ. સુરવીરસિંહ આઈ. ઠાકોર, આર્ટસ્ એન્ડ કોમર્સ કૉલેજ, ઓલપાડ, જિ. સુરત
Associate Professor, Dept of Sanskrit

पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि – ये तीन मुनिओं को नमस्कार करके उसके वाक्यों पर विचार करके ये 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' की रचना की गई है । अब हम पाणिनि के व्याकरण में 14 माहेश्वर सूत्रें की बात करते हैं ।

अइउण–1 / ऋलृक्–2 / एओङ्–3

ऐऔच्–4 / हचवरट्–5 / लण्–6

ञमङणनम्–7 / झभञ्–8 / घढधष्–9

जबगडदश्–10 / खफछढथचटतव्–11 / कयय–12

शषसर्–13 / ठल्–14

इस सूत्रें में संस्कृत भाषा के स्वरों अंतःस्य वर्णो (अर्धस्वरो) सानुनासिक व्यंजनों और निरनुनासिक व्यंजना और उष्माक्षरों का परिचय दिया गया है । इस माहेश्वर के सूत्रे का जो सम्यक उच्चारण किया जाएँ तो व्यक्ति वर्ण का स्पष्ट उच्चारण कर सकता है और किसी व्यक्ति को उच्चारण और बोलने में तकलीफ हो या कई वर्ण का उच्चारण सही ढंग से न कर पाए तो यह व्यक्ति इस सूत्रें के उच्चारण के माध्यम से स्पष्ट उच्चारण कर सकता है । तात्पर्य यह है कि – किसी व्यक्ति में तोतलापन हो तो यह तकलीफ माहेश्वर सूत्रें के उच्चारण से दूर कर सकता है ।

पाणिनि के सूत्रें को संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश और अधिकार इस तरह छः प्रकार से विभाजित किया गया है । इस छः प्रकार के सूत्रें में संज्ञा सूत्र में एक सूत्र– 'तुल्यास्मप्रयत्नं सवर्णम्' आता है । इस सूत्र की वृत्ति में भट्टोजि दीक्षित ने संस्कृत के स्वर और व्यंजन के उच्चारण स्थान को प्रस्तुत किया है । तात्पर्य की स्वर और व्यंजन का उच्चारण किस प्रकार किया जाए वह प्रस्तुत किया गया है । हमारे मुख व्यवहार में तलवे, कंठ, मुर्धा, दन्त, ओष्ठ जैसी इन्द्रियाँ है । इसको हम उच्चारण स्थान कह सकते हैं, जो शरीर विज्ञान के साथ जूड़े हुए हैं । यहाँ पर सूत्र की वृत्ति में भट्टोजि दीक्षित का स्पष्ट कहना है कि –

(1) **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** – अर्थात् अ–स्वर, क–वर्ग याने कि – क, ख, ग, घ और विसर्ग का उच्चारण कंठ स्थान में से होता है ।

यहाँ पर हम उच्चारण शुद्धि की बात करे तो कहा जा सकता है कि – जिस व्यक्ति के पास भट्टोजि दीक्षित की इस वृत्ति की समझ होगी तो वह व्यक्ति अ, क – वर्ग और विसर्ग का उच्चारण कंठ की मदद से ही करेगा । इस प्रकार उच्चारण शुद्धि में पाणिनि के सूत्रे का योगदान महत्त्वपूर्ण है । इस प्रकार आगे देखे तो अन्य उच्चारण के स्थान की बात आती है ।

(2) **चुयशानां तालु –** अर्थात् इ, च – वर्ग याने कि – च, छ, ज, झ, य और श – ये वर्णो तलवें की मदद से बोले जाते हैं ।

(3) **ऋटुरषाणां मूर्धा –** अर्थात् ऋ, ट – वर्ग याने कि – ट, ठ, ढ, र और ष वर्णो का उच्चारण मूर्धा है ।

अपने मुख विवर में उपर के भाग में मूर्धास्थान आया है । इस वर्णो के उच्चारण के वक्त हमारी जीह्वा मूर्धास्थान को स्पर्श करती है ।

(4) **ऌतुलसानां दन्ताः –** याने कि – ऌ – स्वर, त – वर्ग अर्थात् – त, थ, द, ध, ल और स वर्णो को दन्त्य कहा जाता है ।

इस वर्णो के उच्चारण समय हमारी जीह्वा दन्त्य को स्पर्श करती है ।

(5) **उपध्मानीयानाम् ओष्ठौ –** यहाँ पर प वर्ग याने कि – प, फ, ब, भ और उपध्मानीय का उच्चारण ओष्ठ की मदद से होता है । अर्थात् उपध्मानीय – प और फ व्यंजन पूर्व कोई विसर्ग नहीं आया, तो इसके लिए ँ चिह्न (संकेत) का प्रयोग किया जाता है ।

(6) **समङणनानां नासिका च –** यहाँ ञ, म, ङ, ण, न नासिका की मदद से उच्चारण होता है, ऐसा कहा गया है ।

इसके अलावा ए और ऐ कंठ – तालवे की मदद से उच्चारण होता है । ओ और औ कंठय ओष्ठम की मदद से बोला जाता है । व कार का उच्चारण दन्त – ओष्ठय द्वारा होता है । जिह्वा मूल द्वारा होता है और अनुस्वर का उच्चारण नासिका द्वारा होता है । इसके अलावा योग में ओरूम (ॐ) के उच्चारण नाभि, नासिका आदि की मदद से करते हैं तभी तो योग विज्ञान कहता है कि हृदय रोग, उदर रोग में सहायता मिलती है । इसके अतिरिक्त मन की प्रसन्नता, चित्त की एकाग्रता में वृद्धि होती है ।

–00–